



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	03.07.2020	04	01-05

कृषि : एचएयू ने जारी की किसानों के लिए हिदायतें, बाजरा एलर्जी और डायबिटीज में भी सहायक एचएयू ने बाजरे की दो बायोफोर्टीफाइड एचएचबी 299 और 311 किस्म की विकसित, 19 क्विंटल प्रति एकड़ तक होती है पैदावार

भास्कर न्यूज़ हिसार



एचएयू ने बाजरा की दो और किस्में विकसित की हैं। इनमें बायोफोर्टीफाइड एचएचबी 299 और 311 किस्म शामिल हैं। दोनों किस्मों की खासियत है कि यह मात्र 80 दिन में पककर तैयार हो जाती है। एचएयू किसानों को बाजरे की फसल के प्रति जागरूक कर रहा है। उक्त किस्म लोगों के अंदर एलर्जी से लेकर डायबिटीज रोकने में भी सहायक है।

प्रदेश में मानसून जल्द दस्तक देने वाला है। ऐसे में किसान भी फसलों की बिजाई के लिए तैयार हैं। मानसून के साथ बाजरे की बिजाई का समय आ गया है। बाजरे की

बिजाई के लिए जुलाई का प्रथम पखवाड़ा सबसे उत्तम समय है परंतु बारानी इलाकों में मानसून की पहली वर्षा होने पर ही बिजाई करें। एचएयू के वीसी प्रो. केपी सिंह ने किसानों से आह्वान किया कि किसान अपने उपलब्ध साधनों के हिसाब से बीज आदि का प्रबंध कर लें। बाजरा की अच्छी पैदावार के लिए किसान संकर बाजरा का हर साल नया बीज लेकर ही बोएं।

एचएयू की तरफ से अनुमोदित बाजरे की मुख्य किस्में

एचएयू के अनुसंधान निदेशक डॉ. ए.के. सहरावत ने बताया कि एचएयू ने बाजरे की दो नई बायोफोर्टीफाइड किस्मों का अनुमोदन किया है, जिनमें लौह तत्व एवं जिंक अन्य किस्मों के मुकाबले अधिक मात्रा में पाया जाता है। इनमें एचएचबी 299 एक अधिक लौह युक्त (73 पीपीएम) संकर बाजरा किस्म है। इसके दानों व सूखे चारे की औसत उपज क्रमशः 15.8 क्विंटल व 40-42 क्विंटल प्रति एकड़ है। यह किस्म 80-82 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। एच एच बी 311 किस्म भी अधिक लौह युक्त (83 पीपीएम) संकर बाजरा

किस्म है। इसके दानों व सूखे चारे की औसत उपज क्रमशः 15 क्विंटल व 35.2 क्विंटल प्रति एकड़ है। यह किस्म 75-80 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। ये दोनों किस्में अच्छा रखरखाव करने पर एचएचबी 299 व एचएचबी 311 क्रमशः 19.6 व 18.0 क्विंटल प्रति एकड़ तक पैदावार देने की क्षमता रखती हैं। ये किस्में जोगिया रोगरोधी हैं। इन किस्मों के अलावा बाजरे की मुख्य किस्मों में एचएच बी-223, एच एच बी 197, एच एच बी-67 (संशोधित), एचएचबी 226, एचएचबी 234, एचएचबी 272 शामिल हैं।

बढ़ रही है बाजरे की डिमांड ... क्योंकि यह है खूबियों से भरा

■ बाजरे में मुख्यतः 12.8 प्रतिशत प्रोटीन 4.8 ग्राम वसा 2.3 ग्राम रेशे 67 ग्राम कार्बोहायड्रेट एवं खनिज तत्व जैसे कैल्शियम (16 मिली ग्राम), लौह (6 मिली ग्राम), मैग्नीशियम (228 मिली ग्राम), फॉस्फोरस (570 मिली

ग्राम), सोडियम (10 मिली ग्राम), जिंक (3.4 मिली ग्राम), पोटेशियम (390 मिली ग्राम), कॉपर (1.5 मिली ग्राम), पाया जाता है। इसमें गेहूं एवं चावल से अधिक आवश्यक एमिनो अम्ल पाए जाते हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	03.07.2020	01	01

प्रदेश में कृषि उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए किसानों को मिलेंगे जैव उर्वरक

राजधानी हरियाणा | राज्य में कृषि उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए मृदा स्वास्थ्य में सुधार हेतु जैव-उर्वरकों के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए हैफेड ने हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के साथ हैफेड के बिक्री केंद्रों, सहकारी विपणन समितियों और पैक्स के माध्यम से किसानों को अच्छी गुणवत्ता के जैव-उर्वरकों को उपलब्ध करवाने को निर्णय लिया है। यह जैव-उर्वरक हैफेड, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय और हैबिटेट जीनोम इम्प्रूवमेंट प्राइमरी प्रोड्यूसर कंपनी के बीच त्रिपक्षीय समझौता के तहत उपलब्ध करवाए जाएंगे। खेप के आधार पर व्यवस्था के माध्यम से हैफेड द्वारा हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के जैव उर्वरक उत्पादन और प्रौद्योगिकी केंद्र, हिसार में जैव-उर्वरक केंद्रों जैसे अजोतोबैक्टर, राइजोबियम और पीएसबी आदि का अच्छी गुणवत्ता वाला जैव उर्वरक विश्वविद्यालय के विशेषज्ञों के गुणवत्ता पर्यवेक्षण के तहत बेचा जाएगा।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि भूमि	03.07.2020	11	02-04

संकर बाजरे का हर साल नया बीज ही बोएं किसान

- हकृवि ने किसानों के लिए बाजरे की फसल संबंधी जारी की हरिभूमि न्यूज ► हिसार

प्रदेश में मानसून जल्द ही दस्तक देने वाला है। ऐसे में किसान भी फसलों की बिजाई के लिए तैयार हैं। बाजरा हरियाणा एवं पुरे भारत में गेहूँ, धान, मक्का एवं ज्वार के बाद उगाई जाने वाली एक मुख्य खाद्यान्न फसल है। मानसून के साथ बाजरे की बिजाई का समय भी आ गया है। बाजरे की बिजाई के लिए जुलाई का प्रथम पखवाड़ा सबसे उत्तम समय है परंतु बारानी इलाकों में मानसून की पहली वर्षा होने पर ही बिजाई करें।

हकृवि कुलपति प्रोफेसर केपी सिंह ने कहा कि बाजरे की अच्छी पैदावार के लिए किसान संकर बाजरे का हर साल नया बीज लेकर ही बोएं। उन्होंने बताया कि बाजरे की फसल सितम्बर के अन्त या अक्टूबर में पक कर तैयार हो जाती



हकृवि द्वारा अनुमोदित बाजरे की नई बायोफोटीफाईड किस्म।

है।

हकृवि द्वारा अनुमोदित बाजरे की मुख्य किस्में

हकृवि अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने बताया कि विश्वविद्यालय ने बाजरे की दो नई बायोफोटीफाईड किस्मों का अनुमोदन किया है। जिनमें लौह तत्व एवं जिंक अन्य किस्मों के मुकाबले अधिक मात्रा में पाया जाता है। इनमें एच एच बी 299 एक

अधिक लौह युक्त 73 पीपीएम संकर बाजरा किस्म है। इसके दानों व सूखे चारे की औसत उपज क्रमशः 15.8 क्विंटल व 40-42 क्विंटल प्रति एकड़ है। यह किस्म 80-82 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसके अलावा एचएचबी 311 किस्म भी अधिक लौह युक्त 83 पीपीएम संकर बाजरा किस्म है। इसके दानों व सूखे चारे की औसत उपज क्रमशः 15 क्विंटल व 35.2 क्विंटल प्रति एकड़ है। यह किस्म 75-80 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। ये दोनों किस्में अच्छा रखरखाव करने पर एचएचबी 299 व एचएचबी 311 क्रमशः 19.6 व 18.0 क्विंटल प्रति एकड़ तक पैदावार देने की क्षमता रखती हैं। इन किस्मों के अलावा बाजरे की मुख्य किस्मों में एचएचबी-223, एचएचबी 197, एचएचबी-67 (संशोधित), एचएचबी 226, एचएचबी 234, एचएचबी 272 शामिल हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	03.07.2020	04	03-06

संकर बाजरे का हर साल नया बीज ही बोएं किसान: प्रोफेसर के.पी. सिंह हकृवि ने किसानों के लिए बाजरे की फसल संबंधी जारी की हिदायतें

हिसार, 2 जुलाई (ब्यूरो): प्रदेश में मानसून जल्द ही दस्तक देने वाला है। ऐसे में किसान भी फसलों की बिजाई के लिए तैयार हैं।

बाजरा हरियाणा एवं पूरे भारत में गेहूँ, धान, मक्का एवं ज्वार के बाद उगाई जाने वाली एक मुख्य खाद्यान्न फसल है। मानसून के साथ बाजरे की बिजाई का समय भी आ गया है। बाजरे की बिजाई के लिए जुलाई का प्रथम पखवाड़ा सबसे उत्तम समय है परंतु बरानी इलाकों में मानसून की पहली वर्षा होने पर ही बिजाई करें। इसी



बाजरे की दो नई बायोफोर्टीफाइड किस्मों की फाइल फोटो।

को ध्यान में रखते हुए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर के.पी. सिंह ने किसानों से आह्वान किया कि वे अपने उपलब्ध साधनों के हिसाब से बीज आदि का प्रबंध कर लें। बाजरे की अच्छी पैदावार के लिए किसान संकर बाजरे का हर साल नया बीज लेकर ही बोएं। उन्होंने बताया कि बाजरे की फसल सितम्बर के अंत या अक्टूबर में पक कर तैयार हो जाती है।

विश्वविद्यालय द्वारा अनुमोदित बाजरे की मुख्य किस्में

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि विश्वविद्यालय ने बाजरे की दो नई बायोफोर्टीफाइड किस्मों का अनुमोदन किया है जिनमें लौह तत्व एवं जिंक अन्य किस्मों के मुकाबले अधिक मात्रा में पाया जाता है। इनमें एच.एच.बी. 299 एक अधिक लौह युक्त (73 पी.पी.एम.) संकर बाजरा किस्म है। इसके दानों व सूखे चारे की औसत उपज क्रमशः 15.8 क्विंटल व 40-42 क्विंटल प्रति एकड़ है। यह किस्म 80-82 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसके अलावा एच.एच.बी. 311 किस्म भी अधिक लौह युक्त (83 पी.पी.एम.) संकर बाजरा किस्म है। इसके दानों व सूखे चारे की औसत उपज क्रमशः 15 क्विंटल व 35.2 क्विंटल प्रति एकड़ है। यह किस्म 75-80 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। ये दोनों किस्में अच्छा रख-रखाव करने पर एच.एच.बी. 299 व एच.एच.बी. 311 क्रमशः 19.6 व 18.0 क्विंटल प्रति एकड़ तक पैदावार देने की क्षमता रखती हैं। ये किस्में जोगिया रोगरोधी हैं। उन्होंने बताया कि इन किस्मों के अलावा बाजरे की मुख्य किस्मों में एच.एच.बी.-223, एच.एच.बी. 197, एच.एच.बी.-67 (संरोधित), एच.एच.बी. 226, एच.एच.बी. 234, एच.एच.बी. 272 शामिल हैं।

बढ़ रही है बाजरे की डिमांड

बाजरे में मुख्यतः 12.8 प्रतिशत प्रोटीन 4.8 ग्राम वसा 2.3 ग्राम रेशे 67 ग्राम कार्बोहाइड्रेट एवं खनिज तत्व जैसे कैल्शियम (16 मिलीग्राम), लौह (6 मिलीग्राम), मैग्नीशियम (228 मिलीग्राम), फॉस्फोरस (570 मिलीग्राम), सोडियम (10 मिलीग्राम), जिंक (3.4 मिलीग्राम), पोटेशियम (390 मिलीग्राम), कॉपर (1.5 मिलीग्राम) पाया जाता है। इसमें गेहूँ एवं चावल से अधिक आवश्यक एमीनो अम्ल पाए जाते हैं। बाजरे के दानों का सेवन सूजन रोधी, उच्च रक्तचाप रोधी, कैंसर रोधी होता है एवं इसमें इसमें पाए जाने वाले एंटी-ऑक्सिडेंट यौगिक हृदयाघात के जोखिम एवं आंत्र के सूजन को कम करने में मदद करते हैं। बाजरा में उपयुक्त वर्णित खाद्यान्न फसलों के मुकाबले सूखा, निम्न उपजाऊ क्षमता, उच्च लवण उक्त भूमि एवं उच्च तापमान के प्रति अधिक प्रतिरोधक क्षमता पाई जाती है। गेहूँ में यह मुख्य प्रोटीन होता है जो कि सिलियक, असहिष्णुता, स्व-प्रतिरक्षित रोग, एथेरोस्क्लेरोसिस, एलर्जी, और आंतां की पारगम्यता बीमारी का मुख्य कारण है। बाजरे का सेवन टाइप -2 डायबिटीज को रोकने में सहायक है। इसकी इन्हीं विशेषताओं के कारण इसे 'नुद्री सीरियल' नाम दिया गया है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	02.07.2020	--	--

हकृषि ने किसानों के लिए बाजरे की फसल संबंधी जारी की हिदायतें

संकर बाजरे का हर साल नया बीज ही बोएं किसान : कुलपति केपी सिंह

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। प्रदेश में मानसून जल्द ही दस्तक देने वाला है। ऐसे में किसान भी फसलों की बिजाई के लिए तैयार हैं। बाजरा हरियाणा एवं पूरे भारत में गेहूँ, धान, मक्का एवं ज्वार के बाद उगाई जाने वाली एक मुख्य खाद्यान्न फसल है। मानसून के साथ बाजरे की बिजाई का समय भी आ गया है। बाजरे की बिजाई के लिए जुलाई का प्रथम पखवाड़ा सबसे उत्तम समय है परंतु बारानी इलाकों में मानसून की पहली वर्षा होने पर ही बिजाई करें। इसी को ध्यान में रखते हुए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर के.पी. सिंह ने किसानों से आह्वान किया कि वे अपने उपलब्ध साधनों के हिसाब से बीज आदि का प्रबंध कर लें। बाजरे की अच्छी पैदावार के लिए किसान संकर बाजरे का हर साल नया बीज लेकर ही बोएं। उन्होंने बताया कि



हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा अनुमोदित बाजरे की दो नई बायोफोर्टीफाइड किस्मों के फाइनल फोटो।

बाजरे की फसल सितम्बर के अन्त या अक्टूबर में पक कर तैयार हो जाती है।

ऐसे करें खेत की तैयारी

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि बाजरे की बिजाई जुलाई

माह के प्रथम पखवाड़े में उचित होती है, किंतु बारानी इलाके जो बारिश पर निर्भर करते हैं, वहां मानसून की पहली वर्षा होने पर ही बिजाई करें। इसके अलावा 10 जून के बाद 50 से 60 मिलीमीटर वर्षा होने पर भी बिजाई की जा सकती

विश्वविद्यालय द्वारा अनुमोदित बाजरे की मुख्य किस्में

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि विश्वविद्यालय ने बाजरे की दो नई बायोफोर्टीफाइड किस्मों का अनुमोदन किया है जिनमें लौह तत्व एवं जिंक अन्य किस्मों के मुकाबले अधिक मात्रा में पाया जाता है। इनमें एएएबी 299 एक अधिक लौह युक्त (73 पीपीएम) संकर बाजरा किस्म है। इसके दानों व सूखे चारे की औसत उपज क्रमशः 15.8 क्विंटल व 40-42 क्विंटल प्रति एकड़ है। यह किस्म 80-82 दिनों में पककर तैयार ले जाती है। इसके अलावा एएएबी 311 किस्म भी अधिक लौह युक्त (83 पीपीएम) संकर बाजरा किस्म है। इसके दानों व सूखे चारे की औसत उपज क्रमशः 15 क्विंटल व 35.2 क्विंटल प्रति एकड़ है। यह किस्म 75-80 दिनों में पककर तैयार ले जाती है। ये दोनों किस्में अच्छा रखरखाव करने पर एएएबी 299 व एएएबी 311 क्रमशः 19.6 व 18.0 क्विंटल प्रति एकड़ तक पैदावार देने की क्षमता रखती हैं। ये किस्में जोगिया रोगरोधी हैं। उन्होंने बताया कि इन किस्मों के अलावा बाजरे की मुख्य किस्मों में एए बी-223, एए बी 197, एए बी-67 (संशोधित), एए बी 226, एए बी 234, एए बी 272 शामिल हैं।

है। उन्होंने कहा कि किसान खेत की पहली जुताई मिट्टी फलटने वाले हल से करें और बाद में एक या दो जुताई देशी हल से करें। इसके बाद फोरन सुहागा लगाकर अच्छी तरह तैयार करें ताकि घास-फूस न रहे।

बारानी क्षेत्रों में वर्षा से पहले खेत के चारों तरफ खूब मजबूत मेढ़ बनाएं ताकि बारिश का पानी खेत में ही जमा हो जाए और आगामी फसल के भी काम आ सके। बीजोपचार अवश्य करें किसान।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	02.07.2020	--	--

चिकित्सक भगवान का दूसरा रूप : प्रोफेसर के.पी. सिंह

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 2 जुलाई : चिकित्सक भगवान का दूसरा रूप होता है। मौजूदा समय में जारी कोरोना महामारी की विषम परिस्थितियों में चिकित्सकों ने इसे ओर सार्थक सिद्ध भी कर दिया है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर के.पी. सिंह ने राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस की बधाई देते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस को एक जुलाई को देश के महान चिकित्सक और पश्चिमी बंगाल के दूसरे मुख्यमंत्री डॉक्टर बिधानचंद्र राय की जन्मतिथि और पुण्यतिथि के अवसर पर उनकी याद में मनाया जाता है। इसके अलावा यह खास दिन स्वास्थ्य के क्षेत्र में काम करने वाले उन तमाम चिकित्सकों को समर्पित है जो हर



परिस्थिति में चिकित्सीय मूल्यों को बनाए रखते हुए व अपना फर्ज निभाते हुए मरीजों को बेहतर से बेहतर इलाज मुहैया करवा रहे हैं। उन्होंने बताया कि सबसे पहले भारत सरकार की ओर से यह दिन वर्ष 1991 में मनाया गया था। प्रोफेसर के.पी. सिंह ने कहा कि कोविड-19 के चलते देश के चिकित्सक, 'फ्रंटलाइन कोरोना वॉरियर्स' की भूमिका अदा कर रहे हैं। वे न केवल जिंदगी और मौत के बीच संघर्ष कर रहे लोगों का इलाज कर रहे हैं, बल्कि उन्हें नया जीवन भी दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि इसके साथ-साथ चिकित्सकों, नर्सों, सुरक्षा कर्मी, पुलिस कर्मी, सफाई कर्मी सहित सामाजिक कार्यकर्ता व संगठन भी इस महामारी के समय कोरोना योद्धाओं की भूमिका निभा रहे हैं और इनका ये प्रयास सराहनीय है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नित्य शक्ति	02.07.2020	--	--

संकर बाजरे का हर साल नया बीज ही बोएं किसान : वीसी

चौधरी चरण सिंह
हरियाणा कृषि
विश्वविद्यालय ने किसानों
के लिए बाजरे की फसल
संबंधी जारी की हिदायतें



नित्य शक्ति टाइम्स न्यूज हिसार। प्रदेश में मानसून जल्द ही दस्तक देने वाला है। ऐसे में किसान भी फसलों की बिजाई के लिए तैयार हैं। बाजरा हरियाणा एवं पूरे भारत में गेहूँ, धान, मक्का एवं ज्वार के बाद उगाई जाने वाली एक मुख्य खाद्यान्न फसल है। मानसून के साथ बाजरे की बिजाई का समय भी आ गया है। बाजरे की बिजाई के लिए जुलाई का प्रथम पखवाड़ा सबसे उत्तम समय है परंतु

बारानी इलाकों में मानसून की पहली वर्षा होने पर ही बिजाई करें। इसी को ध्यान में रखते हुए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर के.पी. सिंह ने किसानों से आह्वान किया कि वे अपने उपलब्ध साधनों के हिसाब से बीज आदि का प्रबंध कर लें। बाजरे की अच्छी पैदावार के लिए किसान संकर बाजरे का हर साल नया बीज लेकर ही बोएं। उन्होंने बताया कि बाजरे की फसल

सितम्बर के अंत या अक्टूबर में पक कर तैयार हो जाती है।

विश्वविद्यालय द्वारा अनुमोदित बाजरे की मुख्य किस्में

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि विश्वविद्यालय ने बाजरे की दो नई बायोफोर्टीफाइड किस्मों का अनुमोदन किया है जिनमें लौह तत्व एवं जिंक अन्य किस्मों के मुकाबले अधिक मात्रा में पाया जाता है। इनमें एच एच बी 299 एक अधिक लौह युक्त (73 पीपीएम) संकर बाजरा किस्म है। इसके दानों व सूखे चारे की औसत उपज क्रमशः 15.8 क्विंटल व 40-42 क्विंटल प्रति एकड़ है। यह किस्म 80-82 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसके अलावा एच एच बी 311 किस्म

भी अधिक लौह युक्त (83 पीपीएम) संकर बाजरा किस्म है। इसके दानों व सूखे चारे की औसत उपज क्रमशः 15 क्विंटल व 35.2 क्विंटल प्रति एकड़ है। यह किस्म 75-80 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। ये दोनों किस्में अच्छा रखरखाव करने पर एचएचबी 299 व एचएचबी 311 क्रमशः 19.6 व 18.0 क्विंटल प्रति एकड़ तक पैदावार देने की क्षमता रखती हैं। ये किस्में जोगिया रोगरोधी हैं। उन्होंने बताया कि इन किस्मों के अलावा बाजरे की मुख्य किस्मों में एच एच बी-223, एच एच बी 197, एच एच बी-67 (संशोधित), एच एच बी 226, एच एच बी 234, एच एच बी 272 शामिल हैं।
ऐसे करें खेत की तैयारी :
विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ.

एस.के. सहरावत ने बताया कि बाजरे की बिजाई जुलाई माह के प्रथम पखवाड़े में उचित होती है, किंतु बारानी इलाकों जो बारिश पर निर्भर करते हैं, वहां मानसून की पहली वर्षा होने पर ही बिजाई करें। इसके अलावा 10 जून के बाद 50 से 60 मिलीमीटर वर्षा होने पर भी बिजाई की जा सकती है। उन्होंने कहा कि किसान खेत की पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करें और बाद में एक या दो जुताई देशी हल से करें। इसके बाद फौरन सुहागा लगाकर अच्छी तरह तैयार करें ताकि घास-फूस न रहे। बारानी क्षेत्र पहले खेत के चारों तरफ बनाएं ताकि बारिश जमा हो जाए और काम आ सके।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	02.07.2020	--	--

संकर बाजरे का हर साल नया बीज ही बोएं किसान : प्रो. सिंह

हृदय के किसानों के लिए बाजरे की फसल संबंधी जारी की हिदायतें

पांच बजे न्यूज

हिसार प्रदेश में मानसून जल्द ही दस्तक देने वाला है। ऐसे में किसान भी फसलों की बिजाई के लिए तैयार हैं। बाजरा हरियाणा एवं पूरे भारत में गेहूँ, धान, मक्का एवं ज्वार के बाद उगाई जाने वाली एक मुख्य खाद्यान्न फसल है। मानसून के साथ बाजरे की बिजाई का समय भी आ गया है। बाजरे की बिजाई के लिए जुलाई का प्रथम पखवाड़ा सबसे उत्तम समय है परंतु बारानी इलाकों में मानसून की पहली वर्षा होने पर ही बिजाई

करें। इसी को ध्यान में रखते हुए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर के.पी. सिंह ने किसानों से आह्वान किया कि वे अपने उपलब्ध साधनों के हिसाब से बीज आदि का प्रबंध कर लें। बाजरे की अच्छी पैदावार के लिए किसान संकर बाजरे का हर साल नया बीज लेकर ही बोएं। उन्होंने बताया कि बाजरे की फसल सितम्बर के अन्त या अक्टूबर में पक कर तैयार हो जाती है।

विश्वविद्यालय द्वारा अनुमोदित बाजरे की मुख्य किस्में

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि विश्वविद्यालय ने बाजरे की दो नई बायोफोर्टीफाइड किस्मों का अनुमोदन किया है जिनमें लौह तत्व एवं जिंक अन्य किस्मों के मुकाबले अधिक मात्रा में पाया जाता है। इनमें एच एच बी 299

एक अधिक लौह युक्त (73 पीपीएम) संकर बाजरा किस्म है। इसके दानों व सूखे चारे को औसत उपज क्रमशः- 15.8 क्विंटल व 40-42 क्विंटल प्रति एकड़ है। यह किस्म 80-82 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसके अलावा एच एच बी 311 किस्म भी अधिक लौह युक्त (83 पीपीएम) संकर बाजरा किस्म है। इसके दानों व सूखे चारे की औसत उपज क्रमशः- 15 क्विंटल व 35.2 क्विंटल प्रति एकड़ है। यह किस्म 75-80 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। ये दोनों किस्में अच्छा रखरखाव करने पर एचएचबी 299 व एचएचबी 311 क्रमशः- 19.6 व 18.0 क्विंटल प्रति एकड़ तक पैदावार देने की क्षमता रखती हैं। ये किस्में जोगिया रोपरोधी हैं। उन्होंने बताया कि इन किस्मों के अलावा बाजरे की मुख्य किस्मों में एच एच बी-223, एच एच बी 197, एच एच बी-

67 (संशोधित), एच एच बी 226, एच एच बी 234, एच एच बी 272 शामिल हैं। **बढ़ रही है बाजरे की डिमांड**
बाजरे में मुख्यतः- 12.8 प्रतिशत प्रोटीन 4.8 ग्राम वसा 2.3 ग्राम रेशे 67 ग्राम कार्बोहायड्रेट एवं खनिज तत्व जैसे कैल्शियम (16 मिली ग्राम), लौह (6 मिली ग्राम), मैग्नीशियम (228 मिली ग्राम), फॉस्फोरस (570 मिली ग्राम), सोडियम (10 मिली ग्राम), जिंक (3.4 मिली ग्राम), पोटेशियम (390 मिली ग्राम), कॉपर (1.5 मिली ग्राम), पाया जाता है। इसमें गेहूँ एवं चावल से अधिक आवश्यक एमिनो अम्ल पाये जाते हैं। बाजरे के दानों का सेवन सुजन रोधी, उच्चरक्तचापरोधी, कैंसर रोधी होता है एवं इसमें इसमें पाए जाने वाले एटीऑक्सिडेंट यौगिक हृदयाघात के जोखिम एवं अंत्र के सूजन को कम करने

में मदद करते हैं।

बाजरा में उपयुक्त वर्णित खाद्यान्न फसलों के मुकाबले सुखा, निम्न उपजाऊ क्षमता, उच्च लवण उक्त भूमि एवं उच्च तापमान के प्रति अधिक प्रतिरोधक क्षमता पाई जाती है। अतः इस फसल का उत्पादन ऐसी भूमि में भी किया जा सकता है जहाँ पर अन्य फसल लेना संभव न हो। इसके दानों में ग्लूटेन लगभग न के बराबर होता है जबकि गेहूँ में यह मुख्य प्रोटीन होता है जो की सिलिक, असाहिष्णुता, स्व-प्रतिरक्षित रोग, एथेरोस्क्लेरोसिस, एलर्जी, और आंतों की पारगम्यता बिमारी का मुख्य कारण है। अतः उक्त बीमारी वाले लोगों को डॉक्टर द्वारा बाजरा खाने की सलाह दी जाती है। बाजरे का सेवन टाइप-2 डायबिटीज को रोकने में सहायक है इसकी इन्टी विशेषताओं के कारण इसे 'नूट्री सीरियल' नाम दिया गया है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
प्रादेशिकी (देशबन्धु)	02.07.2020	--	--

‘संकर बाजरे का हर साल नया बीज ही बोएं किसान’

हिसार, 2 जुलाई (देशबन्धु)। प्रदेश में मानसून जल्द ही दस्तक देने वाला है। ऐसे में किसान भी फसलों की बिजाई के लिए तैयार हैं। बाजरा हरियाणा एवं पूरे भारत में गेहूं, धान, मक्का एवं ज्वार के बाद उगाई जाने वाली एक मुख्य खाद्यान्न फसल है। मानसून के साथ बाजरे की बिजाई का समय भी आ गया है। बाजरे की बिजाई के लिए जुलाई का प्रथम पखवाड़ा सबसे उत्तम समय है परंतु बाराणी इलाकों में मानसून की पहली वर्षा होने पर ही बिजाई करें। इसी को ध्यान में रखते हुए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर के.पी. सिंह ने किसानों से आह्वान किया कि वे अपने उपलब्ध साधनों के हिसाब से बीज आदि का प्रबंध कर लें। बाजरे की अच्छी पैदावार के लिए किसान संकर बाजरे का हर साल नया बीज लेकर ही बोएं। उन्होंने बताया कि बाजरे की फसल सितम्बर के अन्त या अक्टूबर में पक कर तैयार हो जाती है।



■ बाजरे के लिए जुलाई का महीना माना जाता है महत्वपूर्ण

विश्वविद्यालय द्वारा अनुमोदित बाजरे की मुख्य किस्में

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि विश्वविद्यालय ने बाजरे की दो नई बायोफोर्टीफाइड किस्मों का अनुमोदन किया है जिनमें लौह तत्व एवं जिंक अन्य किस्मों के मुकाबले अधिक मात्रा में पाया जाता है। इनमें एच एच बी 299 एक अधिक लौह युक्त (73

पीपीएम) संकर बाजरा किस्म हैं। इसके दानों व सूखे चारे की औसत उपज क्रमशः 15.8 क्विंटल व 40-42 क्विंटल प्रति एकड़ है। यह किस्म 80-82 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसके अलावा एच एच बी 311 किस्म भी अधिक लौह युक्त (83 पीपीएम) संकर बाजरा किस्म हैं। इसके दानों व सूखे चारे की औसत उपज क्रमशः 15 क्विंटल व 35.2 क्विंटल प्रति एकड़ है। यह किस्म 75-80 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। ये दोनों किस्में अच्छा रखरखाव करने पर एचएचबी 299 व एचएचबी 311 क्रमशः 19.6 व 18.0 क्विंटल प्रति एकड़ तक पैदावार देने की क्षमता रखती हैं। ये किस्में जोगिया रोगरोधी हैं। उन्होंने बताया कि इन किस्मों के अलावा बाजरे की मुख्य किस्मों में एच एच बी-223, एच एच बी 197, एच एच बी-67 (संशोधित), एच एच बी 226, एच एच बी 234, एच एच बी 272 शामिल हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
ऑनलाइन (यूनिक हरियाणा)	02.07.2020	---	---

H.A.U ने किसानों के लिए बाजरे की फसल संबंधी जारी की हिदायतें

July 2, 2020 • Rakesh • Haryana News

संकर बाजरे का हर साब नया बीज ही बीज किसान : प्रोफेसर के.पी. सिंह

यूनिक हरियाणा हिसार : 2 जुलाई 2020

प्रदेश में मानसून जल्द ही दस्तक देने वाला है। ऐसे में किसान भी फसलों की बिजली के लिए तैयार हैं। बाजार हरियाणा एवं पूरे भारत में मूट, धान, मक्का एवं ज्वार के बाद उगाई जाने वाली एक मुख्य खाद्यान्न फसल है। मानसून के साथ बाजरे की बिजली का समय भी आ गया है। बाजरे की बिजली के लिए जुलाई का प्रथम पखवाड़ा सबसे उत्तम समय है परंतु बाढ़नी दुबालों में मानसून की पहली वर्षा होने पर ही बिजली करें। इसी को ध्यान में रखते हुए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर के.पी. सिंह ने किसानों से आग्रह किया कि वे अपने उपखाने सामग्री के हिसाब से बीज जांचि का प्रयोग कर दें। बाजरे की अच्छी पैदावार के लिए किसान संकर बाजरे का हर साब नया बीज लेकर ही बीज। उन्होंने बताया कि बाजरे की फसल सितंबर के अन्त या अक्टूबर में पक कर तैयार हो जाती है।

विश्वविद्यालय द्वारा अनुमोदित बाजरे की मुख्य किस्में



विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहस्वत ने बताया कि विश्वविद्यालय ने बाजरे की दो नई बायोफोर्टीफाइड किस्मों का अनुमोदन किया है जिनमें जीह लचक एवं जिंक अन्वय किस्मों के मुकाबले अधिक मात्रा में पाया जाता है। इनमें एक एक बी 299 एक अधिक जीह युक्त (73 पीपीएम) संकर बाजरे किस्म है। इसकेदानी व सूखे चारे की औसत उपज क्रमशः 15.6 किबंटल व 40-42 किबंटल प्रति एकड़ है। यह किस्म 80-82 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसके अलावा एक एक बी 311 किस्म भी अधिक जीह युक्त (83 पीपीएम) संकर बाजरे किस्म है। इसके दानों व सूखे चारे की औसत उपज क्रमशः 15 किबंटल व 35.2 किबंटल प्रति एकड़ है। यह किस्म 75-80 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। ये दोनों किस्में अच्छा रखरखाव करने पर एकएकबी 299 व एकएकबी 311 क्रमशः 19.6 व 18.0 किबंटल प्रति एकड़ तक पैदावार देने की क्षमता रखती हैं। ये किस्में जौनिया रोगरोधी हैं। उन्होंने बताया कि इन किस्मों के अलावा बाजरे की मुख्य किस्मों में एक एक बी-223, एक एक बी-197, एक एक बी-67 (संशोधित), एक एक बी-226, एक एक बी-234, एक एक बी-272 शामिल हैं।

ऐसे करें खेत की तैयारी

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहस्वत ने बताया कि बाजरे की बिजली जुलाई माह के प्रथम पखवाड़े में उचित होती है, किंतु बाढ़नी दुबाले जो बारिश पर निर्भर करते हैं, वहां मानसून की पहली वर्षा होने पर ही बिजली करें। इसके अलावा 10 जुल के बाद 50 से 60 डिग्रीसेल्सियस वर्षा होने पर ही बिजली की जा सकती है। उन्होंने कहा कि किसान खेत की बाढ़नी जुलाई मिठी पकटने वाले हल से करें और बाद में एक या दो जुलाई देरी हल से करें। इसके बाद फेरियल सुदामा बसाकर अच्छी तरह तैयार करें ताकि पास-पूर न रहे। बाढ़नी क्षेत्रों में वर्षा से पहले खेत के चारों तरफ बूट मजदूर मोह बनाए ताकि बारिश का पानी खेत में ही जमा हो जाए और आगामी फसल के भी काम आ सके।

बीजोपचार अनिवार्य करें किसान

किसान बाजरे का प्रति एकड़ 1.5 से 2 किलोबाय बीज बीज ताकि 60-65 हजार पौधे प्रति एकड़ बाढ़नी अवस्था में तथा 70-75 हजार पौधे प्रति एकड़ अवस्था में प्राप्त हो सकें। बिजली पंजियों में बाढ़नी पाण्डिप तथा दुबला फसल 45 से 50, रखकर इस प्रकार करें कि बीज 2.0 से 2.5 से ज्यादा गहराई पर न पड़े। पौधे से पौधे की दूरी 10 से 12 से.मी. रहे। यदि बीज पहले से उपचारित न हो तो डाइजि मिश्रण (जौनिया या ही बाली बाला रोग) की शुद्धता रोकथाम के लिए बीज को 6 बाय मैटालेक्सिन 35 प्रतिशत प्रति किलो बीज के हिसाब से उपचारित कर देना चाहिए। बाजरे में सिफारिश की गई खादों के साथ-साथ बायोमिक्स (एजोडोबेक्ट, एजोडोबेक्टिविज, पी.एस.बी.) का प्रयोग करने से पैदावार में वृद्धि होती है, प्रति एकड़ बीज को 100 मि.बी. बायोमिक्स से उपचारित करना चाहिए। बिजली के दो से तीन सप्ताह बाद ज्यादा पौधों का विरजन करना तथा जहां कम पौधे हों वहां पर बाढ़नी जगह को भरना चाहिए। वर्षा वाले दिन यह काम अति उपलब्ध है ताकि एक एकड़ में उचित संख्या में पौधे प्राप्त हो सकें।

निराई-मुलाई व खरपतवार नियंत्रण

फसल में खाद मिठी पीटाण के आधार पर दें। बिजली के समय आधी नाइट्रोजन तथा पूरी फास्फोरस (16 कि.बा. नाइट्रोजन 8 कि.बा. फास्फोरस प्रति एकड़ बाढ़नी क्षेत्रों में तथा 62.5 कि.बा. नाइट्रोजन 25 कि.बा. फास्फोरस प्रति एकड़ सिंचित क्षेत्रों में) तथा सोपे नाइट्रोजन की मात्रा सिंचित अवस्था में दो भागों में तीन व पांच सप्ताह बाद प्रयोग करें व बाढ़नी अवस्था में पौधे दुई आधी मात्रा बिजली के 20 से 30 दिन के बाद किसी दिन बारिश होने के बाद हारें। बिजली के तुरन्त बाद 400 बाय पेट्रोलिन प्रति एकड़ 250 लीटर पानी में मिलाकर छिड़कें। यदि बिजली के तुरन्त बाद का प्रयोग न कर सके तो बिजली के बाद 10 से 15 दिन तक ही उनीनी मात्रा प्रयोग कर सकते हैं। वर्षा न होने पर फुटान, फुज आना व दानों की दुधिया अवस्था पर सिंचाई अवश्य करें। बाजरे की फसल में अगर ज्यादा वर्षा हो गई हो तो कुछ घंटों के बाद पानी अवश्य निकास देना चाहिए।

बाद की है बाजरे की सिंचाई

बाजरे में मुख्यतः 12.8 प्रतिशत पोटैश 4.8 बाय बस 2.3 बाय रेशे 67 बाय कार्बोहायड्रेट एवं खनिज लवण जैसे कैल्शियम (16 मिजी बाय), जिंक (6 मिजी बाय), मैग्नीशियम (228 मिजी बाय), फेरफोरस (570 मिजी बाय), सोडियम (10 मिजी बाय), जिंक (3.4 मिजी बाय), पोटैशियम (390 मिजी बाय), कॉपर(1.5 मिजी बाय), पाया जाता है। इसमें मूट एवं पावस से अधिक आवश्यक एडिमेंट अन्वय पाये जाते हैं। बाजरे के दानों का रोशन सुजन रोधी, उपखरपतवाररोधी, कैंसर रोधी होता है एवं इसमें दुधमें पाए जाने वाले पंटीजीनसिडेंट यौगिक इत्यादियों के जोड़ितन एवं अंश के सुजन को कम करने में मदद करती है। बाजरा में उपखरपतवार नियंत्रण खाद्यान्न फसलों के मुकाबले सुखा, निम्न उपखरपतवार, उच्च अन्वय उत्तर भूमि एवं उच्च तापमान के प्रति अधिक प्रतिरोधक क्षमता पाई जाती है। अतः इस फसल का उत्पादन ऐसी भूमि में ही किया जा सकता है जहां पर अन्य फसल जेना संभव न हो। इसके दानों में मूट्रेन समग्रम न के बराबर होता है जबकि मूट्रे में यह मूट्रे पोटैश होता है जो की सिंथेटिक, असिंथेटिक, सन-प्रतिरहित रोग, एथेरोसन्जेरोसिस, एजर्जी, और आंशों की चारमन्वय विनासी का मुख्य कारण है। अतः उच्च बीजरी वाले जौनों को संकर द्वारा बाजरा खाने की सलाह दी जाती है। बाजरे का जीवन चक्र -2 डायमिटीज को रोकने में सहायक है इसकी दुधरी विशेषताओं के कारण इसे 'दुधी लीफर' नाम दिया गया है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
ऑनलाइन (जीवन आधार)	02.07.2020	---	---

संकर बाजरे का हर साल नया बीज ही बोएं किसान : केपी सिंह

SHARE 0



हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने किसानों के लिए बाजरे की फसल संबंधी जारी की हिदायतें

हिसार,

प्रदेश में मानसून जल्द ही दस्तक देने वाला है। ऐसे में किसान भी फसलों की बिजाई के लिए तैयार हैं। बाजार हरियाणा एवं पूरे भारत में गेहूँ, धान, मक्का एवं ज्वार के बाद उगाई जाने वाली एक मुख्य खाद्यान्न फसल है। मानसून के साथ बाजरे की बिजाई का समय भी आ गया है। बाजरे की बिजाई के लिए जुलाई का प्रथम पखवाड़ा सबसे उत्तम समय है परंतु बारानी इलाकों में मानसून की पहली वर्षा होने पर ही बिजाई करें। इसी को ध्यान में रखते हुए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर के.पी. सिंह ने किसानों से आग्रह किया कि वे अपने उपलब्ध साधनों के हिसाब से बीज आदि का प्रबंध कर लें। बाजरे की अच्छी पैदावार के लिए किसान संकर बाजरे का हर साल नया बीज लेकर ही बोएं। उन्होंने बताया कि बाजरे की फसल सितम्बर के अन्त या अक्टूबर में पक कर तैयार हो जाती है।

विश्वविद्यालय द्वारा अनुमोदित बाजरे की मुख्य किस्में

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि विश्वविद्यालय ने बाजरे की दो नई बायोफोर्टिफाइड किस्मों का अनुमोदन किया है जिनमें लौह तत्व एवं जिंक अन्य किस्मों के मुकाबले अधिक मात्रा में पाया जाता है। इनमें एच एच बी 299 एक अधिक लीह युक्त (73 पीपीएम) संकर बाजार किस्म है। इसमें दानों व सूखे घारे की औसत उपज क्रमशः 15.8 विन्टल व 40-42 विन्टल प्रति एकड़ है। यह किस्म 80-82 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसके अलावा एच एच बी 311 किस्म भी अधिक लीह युक्त (83 पीपीएम) संकर बाजार किस्म है। इसके दानों व सूखे घारे की औसत उपज क्रमशः 15 विन्टल व 35.2 विन्टल प्रति एकड़ है। यह किस्म 75-80 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। ये दोनों किस्में अच्छा रखरखाव करने पर एचएचबी 299 व एचएचबी 311 क्रमशः 19.6 व 18.0 विन्टल प्रति एकड़ तक पैदावार देने की क्षमता रखती हैं। ये किस्में जोगिया रांगरोधी हैं। उन्होंने बताया कि इन किस्मों के अलावा बाजरे की मुख्य किस्मों में एच एच बी-223, एच एच बी 197, एच एच बी-67 (संघोषित), एच एच बी 226, एच एच बी 234, एच एच बी 272 शामिल हैं।

ऐसे करें खेत की तैयारी

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि बाजरे की बिजाई जुलाई माह के प्रथम पखवाड़े में उचित होती है, किंतु बारानी इलाके जो बारिश पर निर्भर करते हैं, वहां मानसून की पहली वर्षा होने पर ही बिजाई करें। इसके अलावा 10 जून के बाद 50 से 60 मिलीमीटर वर्षा होने पर भी बिजाई की जा सकती है। उन्होंने कहा कि किसान खेत की पहली जुलाई मिट्टी परतने वाले हल से करें और बाद में एक या दो जुताई देनी हल से करें। इसके बाद फौजन सुहावा लगाकर अच्छी तरह तैयार करें ताकि घास-फूस न रहे। बारानी क्षेत्रों में वर्षा से पहले खेत के चारों तरफ खूब मजबूत मेड़ बनाएं ताकि बारिश का पानी खेत में ही जमा हो जाए और आगामी फसल के भी काम आ सके।

बीजोपचार अवश्य करें किसान

किसान बाजरे का प्रति एकड़ 1.5 से 2 किलोग्राम बीज बोएं ताकि 60-65 हजार पौधे प्रति एकड़ बारानी अवस्था में तथा 70-75 हजार पौधे सिंचित अवस्था में प्राप्त हो सकें। बिजाई पंक्तियों में कननी चाहिए तथा इनका फसला 45 से 60 सें.मी. रखकर इस प्रकार करें कि बीज 2.0 से 3.0 सें.मी. से ज्यादा गहुराई पर न पड़े। पौधे से पौधे की दूरी 10 से 12 सें.मी. रहे। यदि बीज पहले से उपचारित न हों तो ड्राजनी मिश्रण (जोगिया या हरी बालों वाला रांग) की बुझावली रांगोथान के लिए बीज को 6 ग्राम मैटालेक्सिल 35 प्रतिशत प्रति किलो बीज के हिसाब से उपचारित कर देना चाहिए। बाजरे में सिफारिश की गई खादों के साथ-साथ बायोमिक्स (एजोटाबैक्टरी, एजास्पायसिलियम, पी.एस.बी.) का प्रयोग करने से पैदावार में वृद्धि होती है। प्रति एकड़ बीज का 100 मि.ली. बायोमिक्स से उपचारित करना चाहिए। बिजाई के दो से तीन सप्ताह बाद जयादा पौधों का विरतन करना तथा जल का पौधे हो वहां पर खाली जगह को भरना चाहिए। वर्षा वाले दिन यह काम उचित है ताकि एक एकड़ में उचित संख्या में पौधे प्राप्त हो सकें।

निराई-मुड़ाई व खरपतवार नियंत्रण

फसल में खाद मिट्टी परिलग के आधार पर 1 टन बिजाई के समय आधी नाइट्रोजन तथा पूरी फास्फोरस (16 कि.ग्रा. नाइट्रोजन 8 कि.ग्रा. फास्फोरस प्रति एकड़ बारानी क्षेत्रों में तथा 62.5 कि.ग्रा. नाइट्रोजन 25 कि.ग्रा. फास्फोरस प्रति एकड़ सिंचित क्षेत्रों में) तथा शेष नाइट्रोजन की मात्रा सिंचित अवस्था में दो भागों में तीन व पांच सप्ताह बाद प्रयोग करें व बारानी अवस्था में बची हुई आधी मात्रा बिजाई के 20 से 30 दिन के बाद किसी दिन बारिश होने के बाद बोएं। बिजाई के तुरन्त बाद 400 ग्राम एटजीन प्रति एकड़ 250 लीटर पानी में मिलाकर छिड़कें। यदि बिजाई के तुरन्त बाद का प्रयोग न कर सके तो बिजाई के बाद 10 से 15 दिन तक भी उतनी ही मात्रा प्रयोग कर सकते हैं। वर्षा न होने पर कुटाव, फूल आना व दानों की दुर्घटा अवस्था पर सिंचाई अवश्य करें। बाजरे की फसल में अगर जयादा वर्षा हो गई हो तो कुछ घंटों के बाद पानी अवश्य निकाल देना चाहिए।

बद रहे हैं बाजरे की किस्में

बाजरे में मुख्यतः 12.8 प्रतिशत फौटोन 4.8 ग्राम वसा 2.3 ग्राम रेशे 67 ग्राम कार्बोहायड्रेट एवं खनिज तत्व जैसे कैल्शियम (16 मिली ग्राम), लौह (6 मिली ग्राम), मैग्नीशियम (228 मिली ग्राम), फॉस्फोरस (570 मिली ग्राम), सोडियम (10 मिली ग्राम), जिंक (3.4 मिली ग्राम), फोटेनियम (390 मिली ग्राम), कॉपर (1.5 मिली ग्राम), पाया जाता है। इसमें गेहूँ एवं चावल से अधिक आवश्यक एमिनो अम्ल पाये जाते हैं। बाजरे के दानों का सेवन बुजुर्ग रोमी, उच्चरक्तचापरोधी, बीमार रोमी होता है एवं इसमें इसमें पाए जाने वाले एंटीऑक्सीडेंट यौगिक दृढयाघात के जोखिम एवं अंत्र के सूजन को कम करने में मदद करते हैं। बाजार में उपयुक्त वाणिज्य खाद्यान्न फसलों के मुकाबले सूख, मिन्स उपजाऊ क्षमता, उच्च लवण उर्जन क्षमि एवं उच्च तापमान के प्रति अधिक प्रतिरोधक क्षमता पाई जाती है। अतः इस फसल का उत्पादन ऐसी भूमि में भी किया जा सकता है जहाँ पर अन्य फसल लेना संभव न हो। इसके दानों में मजुटेन लगाभग न के बराबर होता है जबकि गेहूँ में यह मुख्य घटीन होता है जो की सिलिक, असहिष्णुता, रूच-पतितसित रोग, एधेरोस्क्लेरोसिस, एलर्जी, और अंतों की पारगम्यता विमारी का मुख्य कारण है। अतः उच्च बीमारी वाले लोगों को ड्राईट ट्वायर बाजार खाने की सलाह दी जाती है। बाजरे का सेवन टाइप -2 डायबिटीज को रोकने में सहायक है इसकी इन्ही विशेषताओं के कारण इसे 'नुट्री सोरियम' नाम दिया गया है।